SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्रामीण महिलाओं के विकास में स्व–सहायता समूहों की भूमिका (विशेष : बेमेतरा जिले के अन्तर्गत बेमेतरा और साजा विकासखण्ड के संदर्भ में)

प्रेमलता पटेल, शोधार्थी,
आर.एन.सिंह, (Ph.D.),
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर, स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
प्रेमलता पटेल, शोधार्थी,
आर.एन.सिंह, (Ph.D.),
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर,
स्नातकोत्तरस्वशासी महाविद्यालय,
दुर्ग, छत्तीसगढ़,, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 01/02/2021
Plagiarism : 05% on 22/01/2021

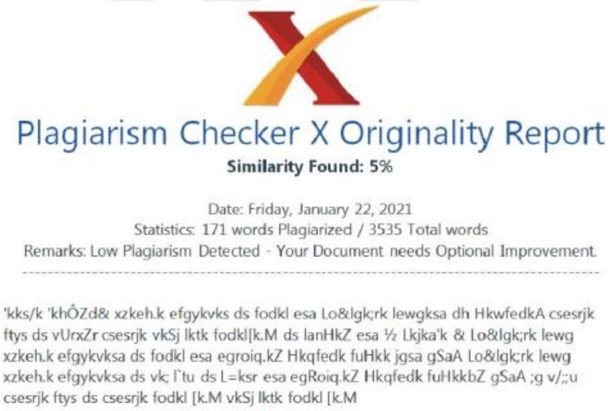
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 5%

Date: Friday, January 22, 2021
Statistics: 171 words Plagiarized / 3535 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

'kks/k 'khÔZd& xzkeh.k efgykvks ds fodkl esa Lo&lgk;rk lewgksa dh HkwfedkA csesrjk ftys ds vUrxZr csesrjk vkSj lktk fodkl[k.M ds lanHkZ esa ½ Lkjka'k & Lo&lgk;rk lewg xzkeh.k efgykvksa ds fodkl esa egroiq.kZ Hkqfedk fuHkk jgsa gSaA Lo&lgk;rk lewg xzkeh.k efgykvksa ds vk; l`tu ds L=ksr esa egRoiq.kZ Hkqfedk fuHkkbZ gSaA ;g v/;;u csesrjk ftys ds csesrjk fodkl [k.M vkSj lktk fodkl [k.M

शोध सार

स्व–सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के विकास में महत्वपुर्ण भुमिका निभा रहें हैं। स्व–सहायता समूहो ने ग्रामीण महिलाओं के आय सृजन के स्त्रोत में महत्वपुर्ण भुमिका निभाई हैं। यह अध्ययन बेमेतरा जिले के बेमेतरा विकास खण्ड और साजा विकास खण्ड के संदर्भ में हैं। बेमेतरा विकसित तथा साजा विकासखण्ड अविकसित क्षेत्र का चयनित किये गये हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य बेमेतरा विकास खण्ड और साजा विकास खण्ड के ग्रामीण महिलाओं के आय एवं बचत में वृद्धि सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार हुई हैं यह ज्ञात करना हैं। प्रस्तुत शोध में यह निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण महिलाओं के विकास में स्व–सहायता समूह का अद्वितीय भूमिका रही हैं। स्व–सहायता व सुक्ष्म वित्त के माध्यम से बेमेतरा विकास खण्ड व साजा विकास खण्ड में महिलाओं के द्वारा उनकी कार्य कलापों संबंधी आर्थिक, सामाजिक और राजनितिक गतिविधियो में वृद्धि हुई हैं। बेमेतरा विकास खण्ड विकसित होने के करण स्व–सहायता समूह संगठनों पर उतने ध्यान नही दे पायी हैं। साजा विकास खण्ड अनुसुचित जनजाति होने के कारण समुहों के गठन में महत्वपुर्ण भुमिका निभायी हैं, इस प्रकार समूह के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक क्षेत्र में सुदृढ़ हुई हैं।

मुख्य शब्द

महिला, सशक्तिकरण, स्व–सहायता समूह, सामाजिक, आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था पुर्णतः कृषि प्रधान देश हैं। देश के सर्वागीण विकास के लिए ग्रामीण विकास बहुत

ही महत्वपुर्ण हैं। भारत में आधे से अधिक जनसंख्या महिलाओं को प्रतिनिधित्व करता हैं और यहाँ की महिलाऐं कृषि आदि कार्यो में संलग्न रहती हैं इसके बावजुद भी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नही कही जा सकती हैं। छत्तीसगढ़ में महिलाओं का प्रतिशत कम हैं, छत्तीसगढ़ राज्य भी एक पुरूष प्रधान देश हैं।

अतः चाहे हम छत्तीसगढ़ राज्य की बात करे या भारत देश की बात करें महिलाओं का विकास अत्याधिक महत्वपुर्ण हैं। अध्ययन क्षेत्र बेमेतरा जिला पुरूष प्रधान जिला हैं, व गाँवो से घिरा हुआ हैं, यहाँ भी पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की जनसंख्या कम हैं। कुल कार्यशील जनसंख्या, कुल जनसंख्या का 49.97 प्रतिशत हैं जिससे कुल कार्यशील महिलाओं का भागीदारी 22 प्रतिशत हैं। महिलाओं का विकास होना अत्यंत आवश्यक हैं और महिलाओं के विकास करने के लिए महिलाओं कों विभिन्न प्रकार के समास्याओं से मुक्ति दिलाने की जरूरत हैं (जैसेः शोषण, साहूकार, रूढ़िया) तभी महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक और शैक्षणिक स्थिति में सुधार हो पायेंगे। इसके लिए शासकीय और अशासकीय दोनों प्रयास हुए, लेकिन इन प्रयासों में व्यक्तिगत प्रयास अधिक हुए। इसके लिए सर्वप्रथम सन् 1974 में भारत के गुजरात राज्य में सुश्री इला भट्ट ने महिलाओं को इकत्रित कर स्व–सहायता समूह का गठन किया हैं।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ मे स्व–सहायता समूह को अधिक सफल बनाने वाले प्रसिद्ध तीजन बाई और श्रीमति फुलवासन बाई जिन्होने महिलाओ को संगठित कर विभिन्न प्रकार से सहायता प्रदान कर महिलाओं में आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता की विकास किया है।

इस प्रकार स्व–सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं के विभिन्न प्रकार के समस्याओं का समाधान, लघु उद्योग में सहयोग स्व–सहायता समूह गाँवो में बेहतर विकल्प साबित हुआ। स्व–सहायता समूहों से महिलाओं में जागरूकता की भावना तथा आर्थिक एवं समाजिक स्थिति में सुधार, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता की भावना बढ़ गयी। अतः स्व–सहायता समूह एक क्रांतिकारी एवं अद्भुत परिवर्तन हैं, यह महिलाओं के विकास का अभिन्न अंग हैं।

स्व–सहायता समूह का अर्थ

स्व–सहायता समूह का शाब्दिक अर्थ ऐसे लोगो के समूह से आर्थिक रूप से एक दुसरे की सहायता करते हुए एकजुट हुए हो। स्व–सहायता समूह आर्थिक और सामाजिक स्तर एवं समान विचारधारी वाले व्यक्तियों का वह समूह हैं, जिसमें सदस्य स्वैक्षिक आधार पर नियमित बचत करते हैं तथा अपने विचारों का अदान–प्रदान कर एक–दुसरे का सहयोग करते हैं। स्व–सहायता समुह की संख्या 10–20 हो सकते हैं, समान वर्ग पृष्ठभुमि के होते हैं।

स्व–सहायता समूह की परिभाषा

स्व–सहायता समूह को निम्न से परिभाषित किया हैं, ***युनीसेफ*** *के अनुसार, स्व–सहायता समूह अपनी आवश्यकता पुर्ति तथा समस्या सामाधान के लिए सामूहिक प्रयास करने का एक साधान हैं।*

राकेश मल्होत्रा के अनुसार, *एक ऐसा गठबंधन हैं जिसमें 5–20 सदस्य स्वेच्छा से एक–दुसरे की मदद करने के उद्देश्य से संगठित होते हैं।* सामान्यतः स्व–सहायता समूह के सदस्य एक–दुसरे से भली–भॉति परिचित होते हैं, एक ही गाँव के सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों और व्यवसाय के होते हैं, अर्थात् वह समरूप होते हैं।

स्व–सहायता समुह का अर्थ कुछ निश्चित उद्देश्यों के लिए अथवा लक्ष्यों के प्राप्ति के लिए कई व्यक्ति के द्वारा परस्पर मिलकर विकसित किये गये संगठन को समूह कहते हैं, स्व–सहायता समुह की सर्वप्रथम अवधारणा बांग्लादेश में, श्री मोहम्मद युनुस ने 1976 से सुक्ष्म वित को आधार मानकर अनेक स्व–सहायता समूहों का सृजन किया गया। बांग्लादेश में गरीबी उन्मुलन हेतु प्रो. युनूस ने पड़े भीषण अकाल के मध्य मोहम्मद युनूस द्वारा 42 परिवारों को 27 डॉलर का चिन्तामुक्त ऋण प्राप्त किया गया, जो अल्प प्रयोग का प्रयोग मात्र था जो सफल रही हैं। ऋण प्रदान करने के लिए ग्रामीण बैंक की स्थापना की, ग्रामीण बैंको द्वारा अल्प मात्रा में निर्धनों के समूह को जिसे स्वयं सहायता समूह कहते हैं।

सबसे पहले भारत के गुजरात राज्य में सुश्री इला भट्ट के नेतृत्व में 1974 में महिलाओं द्वारा संगठित स्वयं सहायता समुहों को सुक्ष्म वित प्रदान कर उन्हे उत्पादन गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया। नाबार्ड संभवतः भारत वर्ष का पहली संस्था हैं, जिसने सर्वप्रथम स्व–सहायता समूह व उनके प्रोत्साहन एक महत्वपुर्ण पहल की।

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध पंडवानी गायक तीजन बाई और पुलवासन बाई अपने आपको सशक्त कर तथा उँचाईयों के पदो पर आगे बढ़े तथा उन्होनें ग्रामीण समाज के अन्य गरीब महिलाओं का समूह बनाकर अन्य लोगो को सशक्त बनाये। इस प्रकार स्व–सहायता समूह सुक्ष्म ऋण के माध्यम से महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण में अपने सार्थकता को सिद्ध किये हैं।

शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य निम्न प्रकार से है:

1. महिला स्व–सहायता समूह के द्वारा महिलाओं के आय एवं बचत में वृद्धि होना।
2. महिला स्व–सहायता समूहों द्वारा सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार।
3. महिला स्व–सहायता समूह में जागरूकता का पता लगाना।

परिकल्पना

शोध प्रबंध के लिए निम्न परिकल्पनाएँ परिकल्पित किए गये हैं:

1. महिला स्व–सहायता समूह के द्वारा महिलाओं के आय में एवं बचत में वृद्धि हुई।
2. स्व–सहायता समूहों के द्वारा महिलाओ में जागरूकता में वृद्धि हुई हैं।

शोध प्रविधि

दो भागों में विभक्त हैं:

1. आंकड़ो का संकलन 2. आंकड़ो का विश्लेषण

1. आंकड़ो संकलन

ग्रामीण महिलाओं के विकास में स्व–सहायता समूहों की भूमिका बेमेतरा जिले के बेमेतरा एवं साजा विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में हैं। जिसमें बेमेतरा विकासखण्ड जो विकसित तथा साजा विकासखण्ड अविकसित क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहा है, का मेरे द्वारा शोध प्रबंध में न्यादर्श के लिए चयनित किये गये है।

प्रत्येक अध्ययन में संमको का समान रूप से प्रतिनिधित्व हो सके इसके लिए भौगौलिक एवं आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विकासखण्ड में स्थिति स्व–सहायता समूहो एक सारणी बनाकर दैव निदर्शन पद्धति के आधार पर प्रत्येक विकासखण्ड 5–5 स्व–सहायता समूह लभन किया जावेगा दैव निदर्शन पद्धति के आधार चयनित स्व–सहायता समूहो के 5–5 सदस्यों 10X5=50 इस तरह 50 सदस्यो का चयन कर अध्ययन किये हैं।

2. आंकड़ो का विश्लेषण

आंकड़ो के विश्लेषण को रोचक एवं तत्थ्यात्मक बनाने के लिए ग्राफ, तालिका, प्रतिशत आदि विधियो के साथ–साथ आंकड़ो को सुगम बनाने हेतु मानचित्र विधि का प्रयोग किया गया हैं। अध्ययन को तत्थ्यात्मक एवं तुलनात्मक बनाने के लिए द्वितीयक आंकड़ो और प्राथमिक समंको का प्रयोग किया गया है।

तालिका 1.1 : शोध प्रविधि को निम्न तालिका के रूप में दर्शाया गया है

क्रमांक	विकासखण्ड	महिला स्व-सहायता समूह का अध्ययन हेतु न्यादर्श	महिला प्रति स्व-सहायता समुह के सदस्यों हेतु न्यादर्श	महिला स्व-सहायता समूहो कुल सदस्यों का अध्ययन हेतु न्यादर्श
1.	बेमेतरा विकसित	5	5	25
2.	सजा अविकसित	5	5	23
योग		10	10	50 न्यादर्श

अध्ययन का क्षेत्र

बेमेतरा जिला छत्तीसगढ़ का एक जिला हैं इसकी स्थापना 1 जनवरी 2012 को हुई हैं। यह जिला दुर्ग संभाग में सम्मिलित हैं। जिले में 5 तहसीले – बेमेतरा, साजा, नवागढ़, बेरला व थानखम्हरिया हैं। यहाँ गावों की संख्या 700 हैं, ग्राम पंचायते 7, नगर पालिका 1, जनपद पंचायत 4, जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 2854081 वर्ग कि.मी. 21090 उत्तरी अक्षांश, 81031 पुर्व देशांत पर स्थित हैं। बेमेतरा जिला में 2011 के अनुसार जनसंख्या 795759, जनसंख्या घनत्व 278 वर्ग कि.मी. लिंगानुपात प्रतिहजार स्त्रियों पर 100 प्रतिशत, अनुसुचित जाति की संख्या 144022, अनुसुचित जन जाति की संख्या 37185, साक्षरता प्रतिशत 69.87 हैं विकासखण्ड 4, बेमेतरा, साजा, बेरला, नवागढ़ विकासखण्ड हैं।

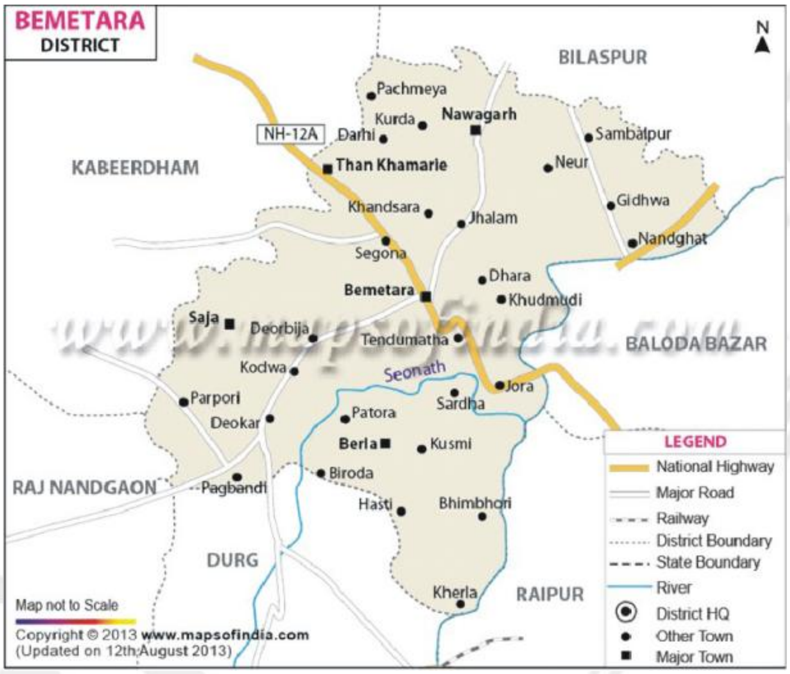

चयनित न्यादर्श विकासखण्ड का परिचय

1. बेमेतरा विकासखण्ड का परिचय

बेमेतरा जिला के विकासखण्डो में बेमेतरा एक विकासखण्ड है, इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 729.79 वर्ग कि. मी. कुल ग्राम 187, आबाद ग्राम 187, ग्राम पंचायत 103 जनपद पंचायत 1, नगर पालिका 1 हैं। बेमेतरा विकासखण्ड का अक्षांश 21070 उत्तरीय और देशांस 81.30 पूर्व पर स्थित हैं। 2011 के जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 21,5624, स्त्री–पुरूष अनुपात 997, अनुसुचित जाति की संख्या 38,300, अनुसुचित जनजाति की संख्या 9841, साक्षरता का प्रतिशत 70.72 हैं।

2. साजा विकासखण्ड का परिचय

बेमेतरा जिला विकासखण्डो में से साजा एक विकासखण्ड हैं। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 451 वर्ग कि.मी. 21066, उत्तर अक्षांश 81053 देशांस पुर्व पर स्थित हैं। कुल ग्राम 109 आबाद ग्राम 108, ग्राम पंचायत 97, जनपद पंचायत 1 हैं। 2011 के जनगणना के अनुसार 117486, स्त्री–पुरूष अनुपात 1004, अनुसुचित जाति की संख्या 14063, अनुसुचित जनजाति की संख्या 8522, कुल साक्षरता 71854 हैं।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शोध कार्य को समझने व विशिष्टता लाने हेतु शोध का अध्ययन करना आवश्यक हैं। अतः निम्न शोध ग्रंथो का अध्ययन किया गया हैं:

1. **यु चेरीनबी, 2010** ''माइक्रो क्रेडिट मैंनेजमेंट वाय वुमेन्स सेल्फ हेल्प ग्रुप्स'' स्व–सहायता समूहों के गुणात्मक एवं संख्यात्मक आयामों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।
2. **कौशिक प्रो. आशा** प्रस्तुत शोध प्रबंध में अपने लेख ''भारत में महिला सशक्तिकरण दशा एवं दिशा में बटमा की नारी उत्थान के लिए किये गये प्रयास उसके समय के स्थित चुनौतियों के संदर्भ में पौन नजर आते हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ यह हैं कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यक्तिक सभी स्तरों पर महिला की प्रबल भुमिका एवं निर्णय प्रक्रिया में प्रभावी सहभागिता हो।
3. **बानीस मह्, 2012** प्रस्तुत शोध में ''स्व–सहायता समुह का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव'' प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि अनुसुचित जाति व सामान्य जाति की महिलाओ की आर्थिक स्थिति में सुधार 100 प्रतिशत पाया। महिलाऐ इस बात की पक्ष में पाया गया कि उनके आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए क्रेडिट पावरफुल दल है जो यह सुक्ष्म ऋण गरीब महिलाओं को योजना से जोड़ती हैं। गरीब महिलाओं को स्व–सहायता समूह के माध्यम से सुक्ष्म ऋण उपलब्ध कराती है ताकि गरीब महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके।
4. **मिश्र कान्तेश्वर कुमार, 2014** प्रस्तुत अध्ययन ''महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण में स्व–सहायता समुह की भुमिका का विश्लेषात्मक अध्ययन राजनांदगाँव जिले के विशेष संदर्भ में'' इस शोध निष्कर्ष यह निकलता हैं कि दैव निदर्शन पद्धति का उपयोग करते हुए 300 न्यादर्श 6 विकासखण्ड को शामिल किया गया हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य स्व–सहायता समूह के माध्यम से गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगो को लाभ हो रहा हैं महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहे हैं। अतः इस शोध का यह निष्कर्ष निकलता हैं कि राजनांदगाँव जिले के महिलाओं तथा स्व–सहायता समूह कार्यक्रम से तमाम ग्रामीण महिलाओं को लाभ हुआ हैं, इसके साथ ही भारत विकास योजनाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, सशक्तिकरण तथा साथ में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ।
5. **डॉ. पाण्डेय शशि, जुन 2016** प्रस्तुत शोध प्रबंध ''स्व–सहायता समूह लघु एवं महिला सशक्तिकरण निष्कर्ष के रूप से यह कहा जा सकता हैं कि समूह की क्रियाओं में भाग लेकर महिलाऐं विभिन्न कार्यो में जुड़कर विकास के नये आयाम से जुड़ गयी हैं तथा समूह के स्तर पर नेतृत्व करने की क्षमता भी उभरी हैं। महिला सशक्तिकरण का प्राथमिक उद्देश्य ही यह हैं कि उनको अपने अधिकारो के प्रति सशक्त किया जाये इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं को स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर बनाने में स्व–सहायता समुह महत्वपुर्ण भुमिका निभा रहे हैं।
6. **उमरे श्रीमती निर्मला, 2013** शोध शीर्षक ''ग्रामीण महिलाओ के आर्थिक – सामाजिक सुदृढ़ीकरण में महिला स्व–सहायता समूह की भुमिका का अध्ययन ''छत्तीसगढ़ के राजनांदगाँव के विशेष संदर्भ में'' के अन्तर्गत 3 विकासखण्डो का अध्ययन किया गया था प्रत्येक विकासखण्ड 200 सदस्यों के अध्ययन हेतु चयन किया गया हैं। शोध का प्रमुख उद्देश्य – सामाजिक, आर्थिक स्थिति का पता लगाना, बजट स्व–सहायता समूहों की स्थिति का अध्ययन करना इस प्रकार शोध प्रबंध से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि स्व–सहायता समुहों की उपयोगिता ग्रामीण परिवारों में गरीबी दुर करने में तथा अधिक से अधिक महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हुआ हैं। स्व–सहायता समुहों के माध्यम से अपनी छोटी–छोटी बचत तथा लघु ऋण के द्वारा महिलाओं के विभिन्न प्रकार के समास्याओं समाधान महिलाओं में जागरूकता आया महिला स्व–सहायता समुह महिलाओं के विकास में पत्थर का मील साबित हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र में सुक्ष्म वृत्त एवं स्व–सहायता समुहों का सशक्तिकरण की क्रिया में एक क्रांतिकारी कदम साबित हुआ हैं।
7. **त्यागी डॉ. निशा, 2018** शोध शीर्षक''भारत में महिला सशक्तिकरण उभरते आयाम प्रस्ततु शोध अध्ययन'' से यह निष्कर्ष प्राप्त होते हैं कि महिलाओं के जागरूकता के लिए सरकार ने विभिन प्रकार के योजनाऐं लागु

किया ताकि महिलाऐ सशक्त हो सके। महिला सशक्तिकरण 2001 महिलाओं कों आर्थिक उत्थान के लिए प्रयास किये गये हैं जिसके तहत महिलाओं के स्थिति में सुधार हो सके हैं। जैसे कि बेटी बचाव बेटी बढ़ाव, सुकन्या योजना ये सभी योजना महिलाओं के विकास के लिए है, परिणाम स्वरूप महिलाऐं पंचायत में भाग लेकर अपने सामाजिक एवं आर्थिक कार्यो को उजागर कर रही हैं।

8. बाफना डॉ. 2018 शोध प्रबंध में स्व–सहायता समूहों की प्रभावी विकास में बैंको के ऋण नीति का योगदान विशेष उज्जैन जिले के सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबंध से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि स्व–सहायता समूह और गैर सरकारी संस्थाओं बैंको के प्रयास से महिलाओं में आत्मनिर्भरता, स्वयं के व्यवसाय संचालित करने की भावना तथा समाज में महिलाओं की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई हैं। स्व–सहायता समूह और बैंक लिंकेज कार्य के द्वारा महिलाओं ने स्वयं के व्यवसाय का संचालन किया हैं, जिससे महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी हुई हैं। गरीबी जैसे समास्याओं को हल कर महिलाओं में आर्थिक सम्पन्नता आयी हैं, इस प्रकार महिलाओ में आत्मसम्मान की वृद्धि हुई हैं।

स्व–सहायता समुह का उद्देश्य

स्व–सहायता समूह का उद्देश्य आपसी बचत एवं ऋण के माध्यम से गरीब लोंगो का सहयोग करना, आकस्मिक सहायता प्रदान करना, लघु एवं कुटीर उद्योग का विकास करना, महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार करना तथा महिलाओं में जागरूकता की भावना लाना हैं।

स्व–सहायता समुह की आवश्यकता

स्व–सहायता समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण को एक महत्वपुर्ण इकाई के रूप में अपनाया गया। स्व–सहायता समूह जो अधिक ऋण एवं बचत से शुरू किये जाते हैं। स्व–सहायता समुह विकास का एक आधार स्तंभ हैं, ग्रामीण महिलाऐं स्व–सहायता समूहों के जरिए सामाजिक व आर्थिक बदलाव ला रही हैं। स्व–सहायता समुहों के माध्यम से महिलाओं ने मेहनत व लगन के बल पर एक नया मुकाम हासिल किये। स्व–सहायता समूहों में स्वैच्छिक संगठन से हमेशा सहयोग प्राप्त होता हैं। स्व–सहायता समुह के आपसी सहयोग तथा बैंको के माध्यम से कम ब्याज दर पर ऋण, उपलब्ध कराकर रोजगार के अवसर में वृद्धि हुए तथा महिलाओं में सशक्त एवं जागरूकता की भावनाा में वृद्धि हो सके तथा महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके। इस प्रकार महिलाओं के विकास के लिए स्व–सहायता समूह की आवश्यकता हुई।

समूह की सदस्यता

समूह की सदस्य संख्या 10 से 20 हो सकती हैं, कोई भी सदस्य स्त्री या पुरूष जो 18 वर्ष का हो चुका है सदस्यता प्राप्त कर सकता हैं। खाता खोला जाता हैं, प्रत्येक सदस्य के पास बैंक खाते होना चाहिए समूह की बैंक होती हैं, सप्ताह में एक बार बुलावे में जाते हैं। समूह की महत्वपुर्ण अभिलेख सदस्यता रजिस्टर, उपस्थिति रजिस्टर, नगदी रजिस्टर, बचत संबंधी रजिस्टर, ऋण संबंधी रजिस्टर होते हैं।

चयनित न्यादर्श स्व–सहायता संबंधी जानकारी

तालिका 1.2 : स्व–सहायता समूह का सदस्य जानकारी

क्रमांक	विकासखण्ड	कुल प्राप्ति समूह		कुल सदस्यों	
		समूह	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत
1	बेमेतरा	254	32.81	02540	24.51
2	साजा	520	67.18	07820	75.42
योग		**774**	**100.00**	**10360**	**100.00**

(स्त्रोत : महिला–बाल विकास केन्द्र मार्च 2018)

तालिका 1.2 से स्पष्ट होता हैं कि बेमेतरा विकासखण्ड जो विकसित क्षेत्र हैं, जहाँ पर स्व–सहायता समूह की संख्या 254 हैं तथा साजा विकासखण्ड जो विकसित क्षेत्र जो महिला स्व–सहायता समूह की संख्या सबसे अधिक 520 हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता हैं कि साजा क्षेत्र महिला स्व–सहायता समूह महिलाओं के विकास में सहायता

प्रदान कर रहे हैं।

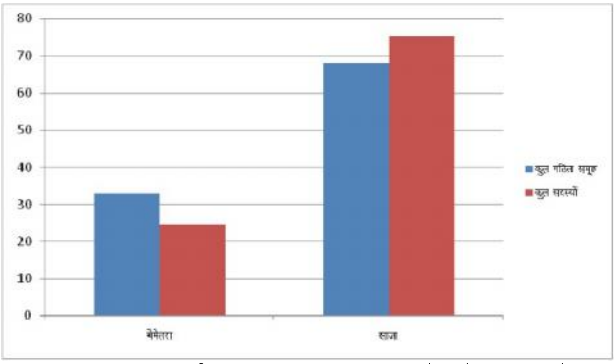

तालिका 1.3 : 2. चयनित न्यादर्श स्व–सहायता समूहो के सदस्यों का वर्गवार विवरण

क्रमांक	विकासखण्ड	अनुसुचित जाति	अनुसुचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	समान्य	योग	प्रतिशत
1	बेमेतरा	720	192	1280	348	2540	24.56
2	साजा	1200	1569	3150	1881	7.800	75.43
योग		1920	1761	4430	2229	10340	100.00
प्रतिशत		18.56	17.03	42.84	21.55	100	

(स्त्रोत : महिला बाल विकास केन्द्र 2018 मार्च)

तालिका 1.3 स्पष्ट होता हैं कि बेमेतरा विकासखण्ड महिला स्वयं सहायता समुहों में सर्वाधिक अन्य पिछड़ा वर्ग 1280 हिन्दु हैं, अनुसुचित जनजाति न्युनतम 192 हैं। साजा विकासखण्ड में अनुसुचित जनजाति 1569 हैं तथा सामान्य 1881 सबसे कम हैं।

तालिका 1.4 : चयनित न्यादर्श में महिला स्व–सहायता समूहो के सदस्यों के निवासित भवन के प्रकार

भवन के प्रकार	विकासखण्ड				योग	
	बेमेतरा		साजा			
	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत
कच्चा	5	20	12	48	17	34
पक्का	15	60	8	32	23	46
अर्द्धपक्का	5	20	5	20	10	20
योग	25	100	25	100	50	100

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

तलिका 1.4 से स्पष्ट होता हैं कि बेमेतरा विकासखण्ड के अन्तर्गत भवन के प्रकार में पक्का भवन सबसे अधिक 60 प्रतिशत, सबसे कम अर्धपक्का एवं पक्का भवन बेमेतरा में पाये गये हैं। इसी प्रकार साजा विकासखण्ड के अन्तर्गत सबसे अधिक कच्चा भवन 48 प्रतिशत सबसे कम अर्धपक्का भवन 20 प्रतिशत पाये गये हैं।

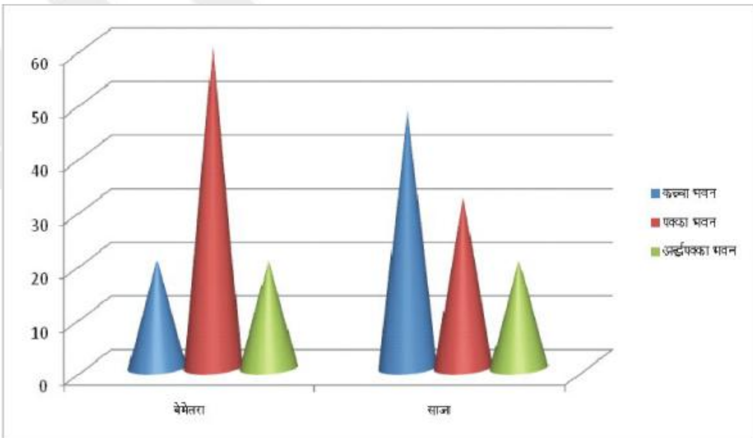

तालिका 1.5 : चयनित न्यादर्श क्षेत्र महिला स्व–सहायता समूह शैक्षणिक संबंधी जानकारी

शिक्षा	विकासखण्ड				योग	
	बेमेतरा		साजा			
	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत
शिक्षित	17	68	10	40	27	54
अशिक्षित	8	32	15	60	23	46
योग	25	100	25	100	50	100

(स्त्रोत : प्राथमिक संमक)

1.5 तालिका में बेमेतरा विकासखण्ड के अन्तर्गत शिक्षित सदस्य न्यादर्श में 68 प्रतिशत तथा अशिक्षित सदस्यों का 32 प्रतिशत पाये गये हैं। ठीक इसी प्रकार साजा विकासखण्ड के अन्तर्गत 40 शिक्षित सदस्य हैं तथा 60 प्रतिशत अशिक्षित लोग हैं।

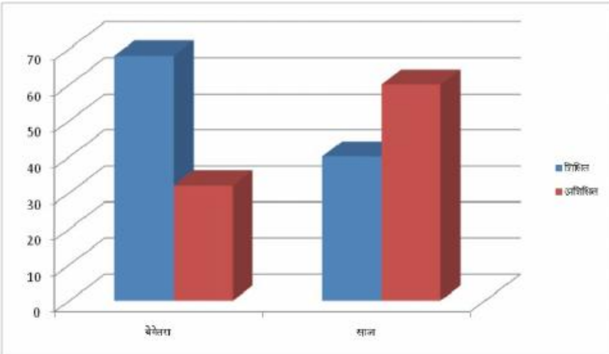

तालिका 1.6 : न्यादर्शक्षेत्र में महिला स्व–सहायता समूहो की मासिक आय संबंधी विवरण

मसिक आय	विकासखण्ड				योग	
	बेमेतरा		साजा			
	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत
0-500	15	60	18	72	33	66
500-1000	6	24	5	20	11	22
1000-2000	3	12	2	8	5	10
2000-3000	1	4	0	0	1	2
योग	**25**	**100**	**25**	**100**	**50**	**100**

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

तलिका 1.6 में बेमेतरा विकासखण्ड के अन्तर्गत मासिक आय सबसे अधिक वाले सदस्य 0–500 के अन्तर्गत 60 प्रतिशत हैं तथा सबसे कम सदस्य 2000–3000 के अन्तर्गत हैं। इसी प्रकार साजा विकासखण्ड के अन्तर्गत मासिक आय सर्वाधिक 0–500 के अन्तर्गत 72 प्रतिशत सदस्य हैं तथा 2000–3000 के अन्तर्गत एक भी सदस्य नहीं हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्व–सहायता समूह में महिलाओं के जुड़ने से मासिक आय में वृद्धि हुई है जो आर्थिक स्थिति में सुधार का स्त्रोत हैं।

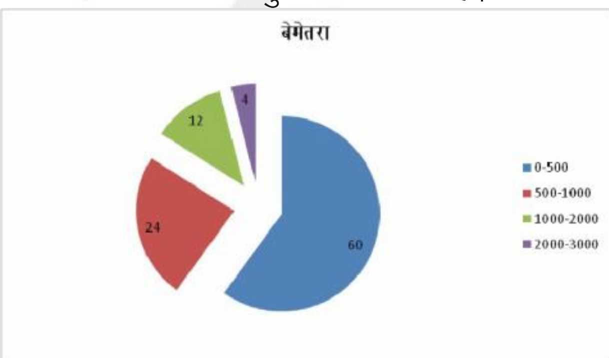

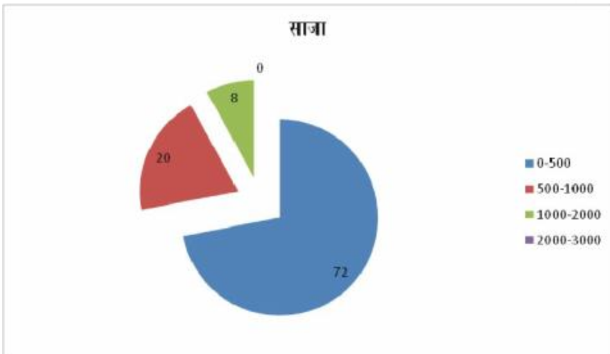

तालिका 1.7 : न्यादर्श क्षेत्र महिला स्व–सहायता समूह के मासिक बचत संबंधी राशि

मसिक आय	विकासखण्ड				योग	
	बेमेतरा		साजा			
	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत	सदस्य	प्रतिशत
0-500	19	76	20	80	39	78
500-1000	4	16	4	16	8	16
1000-2000	2	8	1	4	3	6
2000-3000	0	0	0	0	0	0
योग	**25**	**100**	**25**	**100**	**50**	**100**

(स्त्रोत : प्राथमिक समक)

तलिका 1.7 में बेमेतरा विकासखण्ड के अन्तर्गत 0–500 के अन्तर्गत मासिक बचत वाले सदस्य 76 प्रतिशत सबसे अधिक हैं, तथा 2000–3000 के अन्तर्गत 0 सदस्य हैं ठीक इसी प्रकार साजा विकासखण्ड के अन्तर्गत 0–500 के मासिक बचत वाले 39 प्रतिशत सदस्य हैं तथा सबसे कम 2000–3000 के अन्तर्गत 0 प्रतिशत हैं। इस प्रकार स्व–सहायता समुह के माध्यम से दोनो विकसित क्षेत्र तथा अविकसित क्षेत्र में योगदान प्रदान कर रहे हैं।

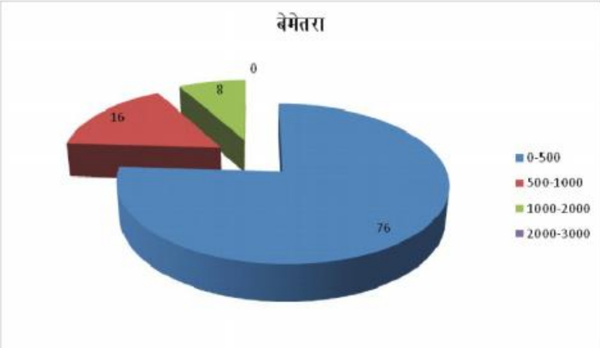

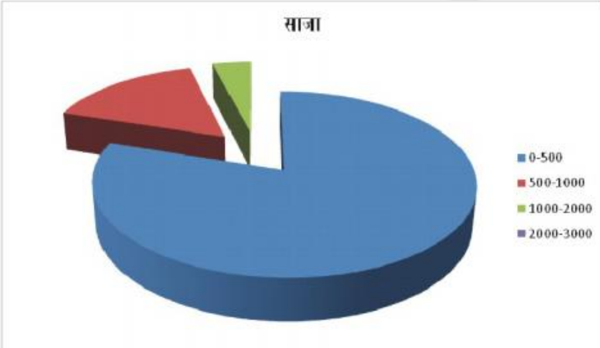

तालिका क्र. 1.8 : अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं के जागरूकता संबंधी विवरण

शासकीय योजनाऐं	विकासखण्ड								योग	
	बेमेतरा				साजा					
	जानकारी		लाभनित		जानकारी		लाभनित		जानकारी	लाभनित
	हॉं	नहीं	हॉं	नहीं	हॉं	नहीं	हॉं	नहीं		
कौशल उन्नयन	20	5	05	20	22	3	15	10	50	50
छत्तीसगढ़ महिला कोश	18	7	10	15	24	1	17	08	50	50
महिला जागृति शिविर	22	3	20	05	24	1	22	03	50	50
सक्षम योजना	16	9	03	22	19	6	10	15	50	50

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

सर्वेक्षण में यहा पाया गया की बेमेतरा विकासखण्ड विकसित क्षेत्र की अपेक्षा साजा विकास खण्ड में स्व–सहायता समुह के द्वारा महिलाओं में अधिक जागरूकता पायी गयी हैं, क्योकि बेमेतरा जिला विकसित होने के कारण वहाँ की महिलाऐं ध्यान नही दे पाती हैं और साजा विकासखण्ड में अनुसुचित जाति एवं जनजाति क्षेत्र होने के कारण समूह गठन में महत्वपुर्ण भागीदारी निभाती हैं।

तालिका क्र. 1.9 : अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं के स्व–सहायता समूह का कार्य संबंधित विवरण

कार्य	विकासखण्ड				योग	
	बेमेतरा		साजा			
	समूह संख्या	प्रतिशत	समूह संख्या	प्रतिशत	समूह संख्या	प्रतिशत
कृषि	10	40.0	09	36	19	38.00
पशुपालन	05	20.9	02	08	07	55.33
उचित मुल्य की दुकान	20	20.3	07	28	12	24.00
कुटीर उद्योग	02	08.0	03	12	05	10.00
लघु उद्योग	03	12.0	04	16	07	14.00
योग -	25	100.0	25	100	50	100.00

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता हैं कि स्व–सहायता समूह के माध्यत से महिलाओं को काम मिलने के कारण महिलाओं के अर्थिक स्थिति में सुधार हुई हैं।

सुझाव

महिला स्व–सहायता समूह के लिए सुझाव निम्न प्रकार से हैंः

1. स्व–सहायता समूह के महिलाओं के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था किया जाए।
2. महिला स्व–सहायता समूह के लिए बैंको की व्यवस्था लचीली होनी चाहिए।
3. महिलाओं को महिला विकास कार्यक्रम योजनाओं और नीतियों की जानकारी होनी चाहिए।
4. पंचायत स्तर पर उत्पादन सहप्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जाए।
5. ऋण की राशि की मात्रा को वर्तमान में 4 गुणा के स्थान पर 10 गुणा कर देना चाहिये।
6. समय–समय पर शासन की ऋण माफी की नीतियाँ समूहों के लिए उचित नही हैं क्योंकि जो समूह ऋण समय–समय पर देते रहते हैं, वह भी बेईमान समूहों की श्रेणी में चले जाते हैं।
7. समूह के द्वारा निर्मित उत्पादकों के विक्रय हेतु शासन द्वारा मेलों एवं प्रदर्शनों का आयोजन करना चाहिए।

सारांश एवं निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि स्व–सहायता समूह महिलाओं को आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में सार्थक सिद्ध हुए हैं। महिला स्व–सहायता समुह महिलाओं के आय एवं रोजगार का एक माध्यम बन गया हैं। स्व–सहायता समूह लघु बचत एवं लघु ऋण के द्वारा ग्रामीण महिलाओं के विभिन्न समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, तथा महिलाओ की जागरूकता तथा प्रतिष्ठा की भावना बढ़ गया हैं। इस प्रकार महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ हैं। अतः कहा जा सकता हैं कि महिलाओं के लिए स्व–सहायता समूह एक क्रांतिकारी परिवर्तन हैं तथा महिलाओं के विकास में स्व–सहायता समुह मील का पत्थर साबित हुए हैं।

संदर्भ सुची

1. त्रिपाठी, मधुसुदन (2011) *''भारत में महिला श्रमिक''*, खुशी पब्लिकेशन गाजियाबाद, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, Isbn.978-93-81133-03-3, Page no- 1.
2. तिवारी, कसिका (अगस्त 2013) *कुरूक्षेत्र* पेज नं.03।
3. मल्होत्रा, राकेश (2007) *विभिन्न योजनाओं में स्व–सहायता समूह,* प्रकाशन एटालांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीबूटर्स प्रा. लि., पे.नं. – 04।
4. पटेल, निरजा एण्ड अग्रवाल, पी.के. (2018) *स्व–सहायता समुह एवं महिला सशक्तिकरण विकास के संदर्भ में,* जी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रीबूटर्स, पे.नं. – 11,12।
5. माण्डोल, मंजु (2015) *स्व–सहायता समुह द्वारा महिला सशक्तिकरण महिला अधिकार और कानुन,* हिमांशु पब्लिकेशन्स, 464, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर 313 002 (राज.), प्रथम संस्करण 2015, Isbn.978-81-7906-473-3, page no. – 75-78
6. शुक्ल एम.एस., सहाय *परिणात्मक पद्धितियॉ*।
7. जिला सांख्कीय पुस्तक बेमेतरा 2019।
8. युचेरी नबी (2010) Micro credit manegment by humans self help groups discovery publishing house, new dehli.
9. कौशिक आशा, स्वामी, भगवती, किशोर, सविता *''महिला सशक्तिकरणक्यों और कैसे''* पेज नं.7।
10. महु, बानीस (2012) *स्व–सहायता समूह का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन,* Indian stremes reasarch journal 2012 Issn-2230-78-50

11. मिश्र, कांतेश्वर कुमार (2014) *''महिलाओं के सामाजिक एवं राजनितिक सशक्तिकरण में स्व–सहायता समूह की भुमिका''* पेज नं.261।
12. पाण्डेय, शशि (2016) *स्व–सहायता समूह लघु ऋण एवं महिला सशक्तिकरण का अध्ययन,* Research article April-June 2016 Page no.64-68
13. उमरे, निर्मला (2013) ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक सुदृढ़ीकरण महिला स्व–सहायता समुहों की भुमिका का अध्ययन।
14. त्यागी, निशा (2018) भारत में महिला सषक्तिकरण के उभरते आयाम, *शोध मंथन* 2018, Issn-0976-5255, Page no – 48-53.
15. बाफना, खुशबु (2018) स्व–सहायता समुहों के प्रभावी विकास में बैंको की ऋण नीति का योगदान। Multidisciplihary Inkdexed International Research Journal, Valum XIV, Issn-2320-3714, journal No. 63012, Page no – 02-05.
16. पटेल, निरजा एण्ड अग्रवाल पी. के. (2018) – स्व–सहायता समुह एवं महिला सशक्तिकरण विकास के संदर्भ में, जी. एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रीबूटर्स, पे.नं. – 14,17।
17. जिला महिला बाल विकास केन्द्र – मार्च 2018।
18. बेमेतरा गजेटेरियल जिला संखाकिय, 2017–18।

****